Impact Factor – 7.367

ISSN-2349-638x

J-23

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

Special Issue No.120

National Education Policy 2020: Promotion of Indigenous Languages, Art and Culture

Chief Editor

Dr.Pramod P. Tandale

Executive Editor

Prof. Prashant Mannikar

IMPACT FACTOR

SJIF 7.367

For details Visit our website

www.aiirjournal.com

Sr. No.	Name of the Author	Title of Paper	Page No.
65.	शेख हुसैन मैनोद्दीन	नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को महत्व	226
66.	डॉ. संगीता उप्पे	भारतीय भाषाओं का संवर्धन संरक्षण एवं विकास	229
67.	प्रा. व्हि. एच. वाघमारे	भाषा और संस्कृती	233
68.	सागर गणपत यादव	संस्कृति और कला के संवर्धन एवं संरक्षण में भाषाओं की भूमिका	236
69.	नयन भादुले-राजमाने	नई शिक्षा नीति में देशी भाषाओ कला एवं संस्कृति को बढ़ावा देने में अनुवाद की भूमिका	239
70.	डॉ. बालाजी श्रीपती भुरे	एक शक्ति के रुप में हिन्दी भाषा	243
71.	प्रा. डॉ. मीना भाऊराव घुमे	हिंदी से ही संभव है भारतीय कला एवं संस्कृति का वैश्विक विस्तार	248
72.	डॉ. ताडेवार घनश्याम विठ्ठल	एक शक्ति के रूप में हिंदी भाषा	252
73.	प्रा.डॉ.रणजित जाधव श्री, परमेश्वर माणिकराव वाकड़े	बहुभाषावाद और भाषा की शक्ति	255
74.	निकिता चंद्रकांत शिरसे	भाषिक विविधता	258
75.	श्री बालाजी हरिश्चन्द्र वाघमारे	भटक्या विमुक्तांच्या आत्मकथनातील साहित्याचे स्वरूप	262
76.	डॉ. सुरेखा सीताराम बनकर	भारतीय सांस्कृतिक विकासात अहिराणी बोलीभाषेचे योगदान (बहिणाबाईची गाणी या विशेष संदर्भात)	266
77.	प्रा.अंगद श्रीपती भुरे	भाषा आणि संस्कृती	269
78.	डॉ. बालाजी विठ्ठलराव डिगोळे	मातृभाषा, कला, साहित्य आणि संस्कृतीच्या विकासात प्राध्यापकांची भूमिका	273
79.	प्रा.डॉ.विलास अण्णाराव गाजरे	मराठी भाषा जतन आणि संवर्धन	280

नई शिक्षा नीति में देशी भाषाओ कला एवं संस्कृति को बढ़ावा देने में अनुवाद की भूमिका

नयन भादुले-राजमाने,
लातूर

नई शिक्षा नीति के अंतर्गत शाला एवं महाविद्यालय में होने वाली शिक्षा की नीति बनाई गई है। भारत सरकार द्वारा एक नई शिक्षा नीति को प्रक्षेपित किया गया है। डॉ. कस्तूरीरंगन के अध्यक्षता मैं तैयार पॉलिसी में 2030 तक स्कूल शिक्षा में 100% जी. आई. आर. के साथ पूर्व विद्यालय से माध्यमिक विद्यालय तक शिक्षा का सार्वभौमिकरण किया जाएगा। जैसे कि पहले 10+2 का पैटर्न फॉलो किया जाता था तथा इस को बदल के नई शिक्षा नीति के तहत अब 5+3+3+4 का पैटर्न फॉलो किया जाएगा।

नई शिक्षा नीति के कुछ प्रमुख सिद्धांत:

शिक्षा को लचीला बनाना, सभी बच्चों की क्षमता की पहचान एवं क्षमता का विकास करना, साक्षरता और संख्यामकता के ज्ञान को बच्चों के तहत विकसित करना, बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को विकसित करना, सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली में निवेश करना, भारतीय संस्कृति से बच्चों को जोड़ना, उत्कृष्ट स्तर पर शोध करना, शिक्षा नीतियों में पारदर्शिता लाना, बच्चों को सुशासन का ज्ञान प्रदान करना एवं उनका सशक्तिकरण करना, तकनीकी यथासंभव उपयोग पर अधिक जोर देना, अनेक प्रकार की भाषाएं सिखाना, बच्चों की सोच को रचनात्मक बनाना और तार्किक करना, मूल्यांकन पर जोर देना आदि। नई शिक्षा निति के अंतर्गत शिक्षा प्रणाली को लचीला बनाया गया हैं। ताकी बच्चे आसाने से शिक्षा प्राप्त करने में सक्षम हो पाए। और ड्रॉपआउट रेट में कमी आए।

नई शिक्षा निति

नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2023 के तहत चुनाव के विकल्प को लचीला बनाया गया हैं। जिससे बच्चें उन्हीं विषयों का चयन कर सके जिनका वह अध्ययन करना चाहते हैं। नई शिक्षा नीति के तहत छात्रों की प्रतिभाओं की पहचान की जाएंगी। साथ ही उनकी प्रतिभा को बढ़ावा दिया जाएगा और उनका विकास भी किया जाएगा। इसके अलावा छात्रों को भी अपनी प्रतिभा एवं रुचि की पहचान करने में भी सहायता प्रदान की जाएगी। शिक्षकों द्वारा बच्चों को मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन दिया जाएगा। इस योजना के माध्यम से बच्चों की प्रतिभा को और निखारा जाएगा।

आज के समय में देश की बेरोजगारी दर घटाने के लिए उच्च शिक्षा को बढ़ावा देना अत्यधिक आवश्यक है। इसलिए विश्वविद्यालयों की शिक्षा प्रणाली में गुणवत्ता लाने के लिए नई शिक्षा नीति के माध्यम से अनेक प्रकार के प्रयास किए जाएंगे। ताकि युवाओं का सम्रग विकास किया जा सके। बहु विषयक विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों के माध्यम से नई शिक्षा नीति के तहत बच्चों को उच्चतर शिक्षा प्रदान की जाएगी। शिक्षकों द्वारा बच्चों को मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन दिया जाएगा। इस योजना के माध्यम से बच्चों की प्रतिभा को और निखारा जाएगा। नई शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य है, कि भारत को वैश्विक स्तर पर शैक्षिक रूप से महाशक्ति बनाया जाए और भारत में शिक्षा का सार्वभौमिकरण कर शिक्षा की गुणवत्ता को उच्च किया जाए। इस नई पॉलिसी से पुरानी एजुकेशन पॉलिसी को बदला जाएगा जिससे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार आएगा और बच्चे भी अच्छी शिक्षा प्राप्त करके अपना जीवन उज्जवल बना पाएंगे। इस योजना का मुख्य उद्देश्य है कि बच्चों तकनीकी तथा रचनात्मक के साथ-साथ शिक्षा का महत्व समझाना तथा उन्हें अपने आने वाले कल के लिए पूर्ण रूप से तैयार करना जिससे उनके अंदर सशक्तिकरण व मनोबल बना रहे।

इसलिये विश्वविद्यालयीन की शिक्षा प्रणाली में गुणवत्ता लाने के लिए नई शिक्षा नीति के माध्यम से अनेक प्रकार के प्रयास किए जाएगें। ताकि युवाओं का समग्र विकास किया जा सके। बहु विषयक विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों के माध्यम से नई शिक्षा नीति तहत बच्चों को उच्चतर शिक्षा प्रदान की जाएगी। इस समय देश में व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करणे वाले छात्रों की संख्या सबसे कम हैं। इसलिए नई नीति के तहत व्यावसायिक शिक्षा को

बढ़ावा देने का प्रावधान रखा गया है। योजना का एक मुख्य लक्ष यह भी है कि उच्च शिक्षण संस्थानों को और बहू विषयक विश्वविद्यालयों महाविद्यालय आदी में स्थानांतरण करना। निष्पक्ष प्रणाली का सहारा लेकर छात्रों का सामाजिक और मानसिक विकास किया जाएगा।

भाषा कला एवं संस्कृति को बढ़ावा देने में अनुवाद की भूमिका:

भारत संस्कृति का खजाना है।,जो हजारों वर्षों से विकसित है और कला, साहित्य, रीति-रिवाजों, परंपराओ, भाषाई अभिव्यक्तियों, कलाकृतियों, विरासत स्थलों और अन्य कार्यों के रूप में प्रकट होता है। पर्यटन के लिए भारत आने, भारतीय आतिथ्य का अनुभव करने, भारत के हस्तक्षेप और हस्तनिर्मित वस्त्रों को खरीदने, भारत के शास्त्रीय साहित्य को पढ़ने, योग का अभ्यास करने और इस सांस्कृतिक धन से दैनिक रूप से दुनिया भर के करोड़ों लोग आनंद लेते है तथा इसका लाभ उठाते हैं।

भाषा, कला और संस्कृति से अटूट रूप से जुड़ी हुई है। भाषाएं किसी एक संस्कृती के लोगों को दुसरों के साथ बोलने के तरीके को प्रभावित करती हैं। सामान्य भाषा के बोलने वालों के बीच बातचीत में निहित लहज़ा, अनुभव की अनुभूति और एक संस्कृति का प्रतिबिंब है। इस प्रकार संस्कृति हमारी भाषाओ में व्याप्त है। साहित्य, नाटकों, संगीत, फिल्म आधी के रूप में कला को भाषा के बीना पूरी तरह से सराहा नहीं जा सकता है।

आज के युग को अनुवाद का युग कहा जाता है। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति होने से विश्व सिमट कर छोटा होता जा रहा है। यातायात और संचार के साधनों में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है, जिसके फलस्वरूप हम भौगोलिक सीमाओं को पार कर बड़े- बड़े और दूर- दूर के देशों से संबंध जुड़ रहे हैं। इसके फलस्वरूप हमारे ज्ञान का विस्तार बढ़ता जा रहा हैं। जिससे हमें 'विश्वबंधुत्व' की भावना को विकसित करने में सहायता प्राप्त हो रही है। भाषा और साहित्य के विकास में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं।

अनुवाद का अर्थ और परिभाषा:

अनुवाद का शाब्दिक अर्थ होता है-'पुन:कथन'। इसमें एक ही भाषा में व्यक्त अर्थ की पुनरुक्ति दूसरी भाषा में होती है। अनुवाद की प्रक्रिया में दो भाषाएं आती हैं। पहली 'मूल भाषा' जिस सामग्री का अनुवाद किया जाता है, इसे 'स्त्रोत भाषा' कहा जाता है। दूसरा जिस भाषा में सामग्री अनुदित की जाती है, उसे 'लक्ष्य भाषा' कहा जाता है। आज अनुवाद हमारे लिए कोई नया शब्द नहीं है। विभिन्न भाषाई मंच पर, साहित्यिक पत्रिकाओ में, अखबारों तथा रोजमर्रा के जीवन में हमें अक्सर अनुवाद शब्द का प्रयोग सुनने के लिए मिलता है।

अलग-अलग विद्वानों ने अपने मत के अनुसार 'अनुवाद' की परिभाषाएं दी हैं - **भोलानाथ तिवारी** के शब्दों में, "किसी भाषा में प्राप्त सामग्री को दूसरी भाषा में भाषांतरण करना अनुवाद हैं।" दूसरे शब्दों में "एक भाषा में व्याप्त विचारों को यथासंभव और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास करना अनुवाद हैं।"

सैमुएल जॉनसन के शब्द में, "मूल भाषा की सामग्री को भावों की रक्षा करते हुए उसे दूसरी भाषा में बदल देना अनुवाद है।"

इस प्रकार उपर्युक्त परिभाषाओ· से यह स्पष्ट होता है कि अनुवाद की प्रक्रिया में दो भाषाओं की अनिवार्यता है। दूसरा भावों और विचारों में समानता हो और यह समानता स्त्रोत भाषा के समतुल्य लक्ष्य भाषा में उपलब्ध होने पर ही हो सकती है। मनुष्य एक बुद्धिजीवी प्राणी है। वह अपने परिवेश के अतिरिक्त और भी बहुत कुछ जानने की कोशिश करता है। इसलिए वह अपने परिचित समाज से निकलकर अपरिचित समाज में जाकर वहाँ के भाषा- बोली, रहन-सहन, आचार- विचार,रीति-रिवाज, खान-पान आदी कई चीजों को जानना, समझना और सीखना चाहता है। तो हम कह सकते है कि दूसरे की भाषा और बोली को जानने के लिए हमें अनुवाद का सहारा लेना पडता है। अनुवाद के द्वारा हम विश्व के सभी भाषा में व्यक्त किए गए विचारों को जान सकते हैं।

अनुवाद का क्षेत्र बहुत ही विस्तृत हैं। आज के समय में यह और भी विस्तृत होता जा रहा हैं। नई शिक्षा नीति की सबसे बड़ी विशेषता यह हैं कि इसमें कला, संस्कृति और भाषा के माध्यम से मनुष्य के सृजनात्मक क्षमता को जागृत करने पर बल दिया गया है। अनुवाद के माध्यम से विश्व के कला संस्कृति और भाषा से हम जुड़ पाएगें तथा जान भी पाएगें। भारत, संस्कृति का समृद्ध भंडार है तथा यहाँ की कला, साहित्यिक कृतियों प्रथाओ· परम्पराओ· भाषाई अभिव्यक्तियों, कलाकृतियों, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक

त्योहारों के स्थलों आदी में यह परिलक्षित होता है। राष्ट्रीय शिक्षा निति में भारत की इस सांस्कृतिक संपदा का संरक्षण, संवर्धन एवं प्रसार बनाना यह उद्देश है। संस्कृति का प्रसार करने का सबसे प्रमुख माध्यम कला है। कला- सांस्कृतिक पहचान, जागरूकता को समृद्ध करने और समुदायों को उन्नत करने के अतिरिक्त व्यक्तियों में सज्ञानात्मक और सृजनात्मक क्षमताओ' का संवर्धन तथा व्यक्तिगत प्रसन्नता को बढ़ावा देती है। भाषा, नि:संदेह, कला एवं संस्कृति से अटूट रूप से जुड़ी हुई हैं। अनुवाद के माध्यम से सर्वसाधारण को विभिन्न भारतीय एवं विदेशी भाषाओ' में उच्चतर गुणवत्ता युक्त अधिगम सामग्री और अन्य महत्वपूर्ण लिखित एवं मौखिक सामग्री उपलब्ध हो सके।

अनुवाद की आवश्यकता:

बीसवीं शताब्दी में देशों के बीच की दूरियाँ कम होने के परिणामस्वरूप विभिन्न वैचारिक धरातलों और आर्थिक, औद्योगिक स्तरों पर पारस्परिक भाषिक विनिमय बढ़ा है और विनिमय के साथ-साथ अनुवाद का प्रयोग और अधिक किया जाने लगा है। आज के वैज्ञानिक युग में अनुवाद बहुत महत्त्वपूर्ण हो गया है। यदि हमें दूसरे देशों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलना है तो हमें उनके यहाँ विज्ञान के क्षेत्र में, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में हुई प्रगति की जानकारी होनी चाहिए और यह जानकारी हमें अनुवाद के माध्यम से मिलती है।

राष्ट्रीय एकता में अनुवाद की आवश्यकता हैं। भारत जैसे विशाल राष्ट्र की एकता के प्रसंग में अनुवाद की आवश्यकता असंदिग्ध है। भारत की भौगोलिक सीमाएँ न केवल कश्मीर से कन्याकुमारी तक बिखरी हुई हैं बल्कि इस विशाल भूखण्ड में विभिन्न सम्प्रदायों के लोग रहते हैं जिनकी भाषाएँ एंव बोलियाँ एक दूसरे से भिन्न हैं। भारत की अनेकता में एकता इन्ही अर्थों में है कि विभिन्न भाषाओं, विभिन्न जातियों, विभिन्न सम्प्रदायों के देश में भावात्मक एवं राष्ट्रीय एकता कहीं भी बाधित नहीं होती।

अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य के अनुवाद से ही यह तथ्य प्रकाश में आया कि दुनिया के विभिन्न भाषाओं में लिखे गए साहित्य में ज्ञान का विपुल भण्डार छिपा हुआ है। भारत में अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य का अनुवाद तो भारत में सूफियों के दार्शनिक सिद्धान्तों के प्रचलन साथ ही शुरू हो गया था; किन्तु इसे व्यवस्थित स्वरूप आधुनिक युग में ही प्राप्त हुआ। शेक्सपियर, डी.एच. लॉरेंस, मोपासाँ तथा सार्त्र जैसे चिन्तकों की रचनाओं के अनुवाद से भारतीय जनमानस का साक्षात्कार हुआ एवं कालिदास, रवीन्द्रनाथ टैगोर एवं प्रेमचन्द की रचनाओं से विश्व प्रभावित हुआ।

दुनिया के विभिन्न भाषाओं के अनुवाद द्वारा ही तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में सहायता मिलती है। तुलनात्मक साहित्य द्वारा इस बात का पता लगाया जाता है कि देश, काल और विभिन्न भाषाओं के रचनाकारों के साहित्य में साम्य और वैषम्य क्यों हैं? तुलनात्मक अध्ययन अनुवाद के फलस्वरूप ही संभव हो सका हैं। व्यवसाय के रूप में अनुवाद की आवश्यकता हैं। नव्यतम ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्रों में अनुवाद की आवश्यकता हैं।

सारांश में नई शिक्षा नीति में देशी भाषाओं, कला एवं संस्कृति को बढ़ावा देने में अनुवाद अहं भूमिका निभाएगा। भाषाओं को प्रासंगिक और जिवंत बनाए रखने के लिए इन भाषाओं में पाठ्य पुस्तकों, कार्यपुस्तिकाओं, व्हिडिओ, नाटकों, कविताओं, उपन्यासों, पत्रिकाओं आदि सहित उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा और प्रिंट सामग्री का एक सतत प्रवाह होना चाहिए। देशभर में भारतीय भाषाओं, तुलनात्मक साहित्य, रचनात्मक लेखन, कला, संगीत, दर्शन आदी में मजबूत विभाग और कार्यक्रम शुरू करने चाहिए। तथा उन्हें विकसित भी करना होगा। अधिक उच्च शिक्षा संस्थान, और उच्च शिक्षा में अधिक कार्यक्रम, शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा या स्थानीय भाषा का ही उपयोग करें। या द्विभाषी से कार्यक्रम पेश करना चाहिए। उच्च शिक्षा प्रणाली के भीतर अनुवाद और व्याख्या कला और संग्रहालय, पुरातत्व, कलाकृति संरक्षण,ग्राफिक डिझाईन और वेब डिझाईन में उच्च गुणवत्ता वाले कार्यक्रम और डिग्री भी बनाने चाहिए। छात्रों द्वारा देश के विभिन्न हिस्सों में भ्रमण, जो न केवल पर्यटन को बढ़ावा देगा बल्कि भारत के विभिन्न हिस्सों की विविधता, संस्कृति, परंपराओं और ज्ञान की समझ और प्रशंसा को भी बढ़ावा देगा। भारत इसी तरह उन हजारों पांडु लिपियों को इकट्ठा कर, संरक्षित कर, अनुवाद करने और अध्ययन करने के मजबूत प्रयासों के साथ सभी शास्त्रीय भाषाओं और साहित्य का अध्ययन करने वाले अपने संस्थानों और विश्वविद्यालयों का विस्तार करेगा।भारत जैसे बहुभाषा-भाषी देश के जन-समुदायों के बीच अंत: संप्रेषण के संवाहक के रूप में अनुवाद का बहुआयामी प्रयोजन

सर्वविदित है। यदि आज के इस युग को 'अनुवाद का युग' कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति न होगी, क्योंकि आज जीवन के हर क्षेत्र में अनुवाद की उपादेयता को सहज ही सिद्ध किया जा सकता है। धर्म-दर्शन, साहित्य-शिक्षा, विज्ञान-तकनीकी, वाणिज्य व्यवसाय, राजनीति-कूटनीति, आदि सभी क्षेत्रों से अनुवाद का अभिन्न संबंध रहा है। अतः चिंतन और व्यवहार के प्रत्येक स्तर पर आज मनुष्य अनुवाद पर आश्रित है। इतना ही नहीं विश्व-संस्कृति के विकास में भी अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

विश्व के विभिन्न प्रदेशों की जनता के बीच अंतः संप्रेषण की प्रक्रिया के रूप में, उनके बीच भावात्मक एकता को कायम रखने में, देश-विदेश के नवीन ज्ञान-विज्ञान, शोध-चिंतन को दुनिया के हर कोने तक ही नहीं, आम जनता तक भी पहुँचाने में तथा दो भिन्न संस्कृतियों को नजदीक लाकर एक सूत्र में पिरोने में अनुवाद की महती को नकारा नहीं जा सकता। इस प्रकार नई शिक्षा नीति में देशी भाषाओं, कला एवं संस्कृति को बढ़ावा देने में अनुवाद अपनी अहम भूमिका निभाएगा।

संदर्भ :

1. rashtriyashiksha. Com
2. hi.m.wikipedia.org
3. bhaskar. com
4. वेंकटेश्वर.डॉ.एम.,भारतीय साहित्य में अनुवाद की भूमिका
5. चौधरी डॉ. इन्द्रनाथ, तुलनात्मक साहित्य:भारतीय परिप्रेक्ष्य
6. रणसुभे डॉ.सूर्यनारायण , अनुवाद, वर्णव्यवस्था आणि मी

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com